तारे ज़मीं पर और दरशील आसमां पर

तारे ज़मीं पर आजकल चर्चा में है। पिछले अंक में तुमने इस फिल्म के संगीत के बारे में पढ़ा। इस फिल्म के ईशान उर्फ दरशील सफारी के अभिनय ने सभी को प्रभावित किया। उसकी शरारतों, उमंगों, सपनों ने जहाँ जी भर हँसाया, वहीं उसकी चुप्पी ने अन्दर तक डरा दिया। इस फिल्म में दरशील ने एक डिस्लेक्सिया पीड़ित बच्चे का किरदार निभाया है। डिस्लेक्सिया पीड़ित लोगों को खास तौर पर लिखी हुई चीज़ें पढ़ने में और हिज्जे पहचानने में दिक्कत होती है। अक्सर इसे दिमागी कमज़ोरी मान लिया जाता है जो यह है नहीं। तो चलिए दरशील से बातचीत करते हैं। और हाँ, डिस्लेक्सिया पर जाने-माने अँग्रेज़ी लेखक रोअल्ड डाल की एक किताब, *निबिलेस्विक का पादरी,* की कहानी भी पढ़ते हैं:

तारे ज़मीं पर हिट हो गई है। कैसा लगता है स्टार बनकर?

दरशीलः मुझे तो वैसा ही लगता है जैसे मैं पहले था। अभी छुट्टियाँ चल रही हैं। स्कूल खुलेगा तो कॉपी-बस्ता उठाकर स्कूल चल दूँगा।

शूटिंग के दौरान कोई मस्ती करते थे?

दरशीलः हाँ, कुछ-कुछ। वहाँ मुझे रोने के लिए ग्लिसरीन दी जाती थी। लेकिन मुझे उसका स्वाद इतना अच्छा लगता कि थोड़ी-सी आँख पर लगाता और बाकी गड़प कर जाता। और हाँ, लाइट वाले दादा को मैं अक्सर कहता कि आपने लाइट पर अण्डे क्यों लगा रखे हैं? दरअसल सेट्स पर जितनी लाइट चाहिए उससे ज़्यादा न हो जाए इसलिए अण्डे के आकार के मीटर लगाए जाते थे जिन्हें मैं अण्डे कहता।

आमिर अंकल को लगता मैं नौटंकी हूँ। हो सकता है मैं हूँ भी। पर वो भी मेरे चीटर-टीचर हैं। खेल में रोमांटी करना उन्होंने मुझे सिखाया।

तुम्हें कौन-सा एक्टर सबसे ज़्यादा पसन्द है?

दरशीलः रितिक रोशन और कौन हो सकता है?

और हीरोइन?

दरशीलः रानी मुखर्जी और ऐश्वर्या राय दोनों।

बड़े होकर क्या करने का इरादा है?

दरशीलः बहुत-सी चीज़ें हैं दिमाग में बनने के लिए। कभी लगता है बिज़नेस करूँ, कभी गहने डिज़ाइन करने का इरादा बनता है। कभी-कभी एक्टर, कभी गायक और कभी डांसर बनने का भी मन करता है।

अमोल गुप्ते और दीपा भाटिया

अमोल *तारे ज़मीं पर* के लेखक तथा क्रिएटिव डाइरेक्टर हैं। दीपा ने इस फिल्म के विषय के बारे में सोचा, जाँच-परख की, सम्पादन किया। उन्होंने स्कूल, टीचरों, बच्चों, पढ़ाई के बारे में और ज़्यादा जानने के लिए सात साल मुम्बई के स्कूलों में बिताए।

निबिलेस्विक का पादरी

एक बार की बात है। इंग्लैण्ड में एक बेहद प्यारा पादरी रहता था – रेवरेंड ली। उसका जीवन बड़े मज़े से चल रहा था। फिर एक बार उसका तबादला एक छोटे-से गाँव – निबिलेस्विक – में हुआ। बस यहीं से उसके जीवन में एक तूफान-सा आ गया।

किस्सा यूँ है...

बहुत पहले रेवरेंड ली एक छोटा-सा बच्चा था – रॉबर्ट ली। वह डिस्लेक्सिया से बुरी तरह पीड़ित था। उसे लन्दन के डिस्लेक्सिया संस्थान और कुछ बढ़िया शिक्षकों की भरपूर मदद मिली। रॉबर्ट ने भी क्या ज़बर्दस्त तरक्की की। जब तक वह 18 बरस का हुआ वो लगभग सामान्य बच्चों जैसा हो गया था। वह पादरी बनना चाहता था। अपनी इच्छा पूरी करने के लिए उसने ट्रेनिंग लेनी भी शुरू कर दी थी।

27 बरस का होते-होते वह रेवरेंड ली बन चुका था। और निबिलेस्विक में बतौर पादरी यह उसकी पहली नियुक्ति थी। रेवरेंड ली की पुरानी कार गाँव की ओर दौड़ी जा रही थी। अचानक उसे लगा कि वो अकेला इतनी बड़ी ज़िम्मेदारी कैसे सम्भालेगा। उसे घबराहट होने लगी। रात को सोने जाते समय भी उसके दिमाग में यही सब घूम रहा था – मिस्टर ली ज़रा सोचो – शादियाँ, मैय्यत, इतवार की पूजा, नामकरण...क्या कर पाओगे इतना सब? वो पसीना-पसीना हो गया। उस खौफनाक रात ली के दिमाग में कोई ऐसा खटका दबा कि पुराना डिस्लेक्सिया फिर लौट आया – थोड़ा रूप बदलकर। ली का दिमाग अनजाने ही वाक्य के सबसे खास शब्दों को चुनता और उलट देता। जैसे trap बन जाता part, God बन जाता dog। इतना सब हो जाता और ली को इसका पता ही न चलता। ली इस गड़बड़ी से अनजान था, इसलिए उसे ठीक करने के बारे में भी न सोचता।

अगले दिन जब रेवरेंड ली उठा तो उसे एक पर्ची मिली। दिल और पैसे से रईस एक महिला के बारे में। उनका नाम था – Miss Prewt। पादरी ली झट उनसे मिलने चल दिए। दरवाज़ा खटखटाया। एक दुबली-पतली लम्बी महिला ने दरवाज़ा खोला। ली बोले, "Miss Twerp (मिस बेवकूफ, गँवार), मैं हूँ आपका नया rotsap। मेरा नाम है Eel (एक प्रकार की मछली), Robert Eel."

इतने में एक प्यारा-सा कुत्ता Miss Prewt की टाँगों के बीच से झाँकने लगा। रेवरेंड ली झुके और मुस्कुराए, "Good god. Good little god." चकराई Miss Prewt बोलीं, "तुम्हारा दिमाग खराब है?" और ज़ोर से दरवाज़ा बन्द कर दिया। रेवरेंड हैरान-परेशान लौट आए सोचते हुए कि ऐसा क्या कसूर हुआ मुझसे?

धीरे-धीरे हालात बद से बदतर होते गए। जल्द ही गाँव भर में फैल गया कि नया पादरी है तो बड़ा प्यारा है, पर है निरा झक्की। उस दिन तो हद ही हो गई। शनिवार को महिलाएँ चर्च में किसी कार्यक्रम की तैयारी में थीं।

"एक बात बताएँ। जब वाइन (एक शराब) का प्याला सभी के बीच घुमाया जाता है तो gulp (एक बड़ा घूँट) करना चाहिए या sip (सुड़कना) भर करना चाहिए," किसी ने पूछा।

"न न न कभी भी plug (मुँह बन्द करना) नहीं करना चाहिए। अगर सभी plug करें तो अन्तिम व्यक्ति तक पहुँचते-पहुँचते तो प्याले में कुछ बचेगा ही नहीं। समझे! तुम्हें जो करना है वो है pis (पेशाब करना), pis, pis। धीरे-धीरे। सब लोग। पहले व्यक्ति से अन्तिम व्यक्ति तक सभी pis, pis, pis। समझे!" बैठक झटके से बीच में ही खत्म हो गई। अजब अफरा-तफरी थी। ली से ऐसे व्यवहार की किसी को उम्मीद नहीं थी।

यह कोई आखरी किस्सा न था। ऐसे हादसे होते रहे। कुछ लोगों को इनमें मज़ा भी आने लगा। चर्च के अब तक के लम्बे उबाऊ उपदेशों से तो यह अच्छा ही था।

आखिरकार एक डॉक्टर ने उनके मर्ज़ को ताड़ लिया। इस अजब मर्ज़ का नाम था – पीछे से आगे का डिस्लेक्सिया। इसका इलाज भी अजीबोगरीब था। वो यह कि जब भी ली कुछ बोलें, वे बिना मुड़े पीछे की ओर चलते रहें। इससे सारे शब्द ठीक-ठाक हो गए। लेकिन परेशानी यह थी कि पीछे चलें तो किसी से टकराकर गिर न पड़ें! इसका भी इलाज ढूँढ निकाला गया। गाड़ियों में साइड में लगने वाला शीशा पादरी साहब के सिर से बाँध दिया गया। इसने सब ठीक कर दिया। चर्च का नज़ारा तो और भी रोचक हो ही गया था। प्रवचन चलते रहते और पादरी पीछे-पीछे गोले में घूमते जाते।

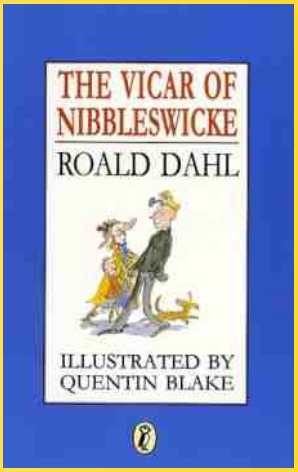

साभार - *The Vicar of Nibbleswicke* (रोअल्ड डाल और क्वेंटिन ब्लेक की यह किताब लन्दन के डिस्लेक्सिया इंस्टीट्यूट के लिए लिखी गई है।)